Page No.
Date

Vocation in Vocation Contest
NSN INDIA

May 2019,
A Short Story
Medium :- हिन्दी

चूँकि अब हम बारहवीं में हैं तो टीचर्स ढेर सारा होम-वर्क देती हैं। हमेशा की तरह उस दिन भी मैम ने ढेर सारा होमवर्क दिया था और कल तक सारा काम पूरा कर लेने की चेतावनी दी।
कंधे पर कड़ी धूप में भारी बस्ता पीठ पर लादे हुए छुट्टी के वक़्त मैं यही सोच रही थी की मैं अपना होमवर्क कैसे पूरा करूंगी! क्योंकि समय बहुत कम था और होमवर्क ढेर सारा। और फिर मैंने स्कूल का पिछला काम भी नहीं किया था। इन सभी चीज़ों के साथ एक बात और भी थी जो मुझे और परेशान कर रही थी। वो ये कि स्कूल से आते ही मेरी सो जाने की बुरी आदत थी। इसलिए सभी बच्चों के मुकाबले मुझे थोड़ा अधिक ही भय था। अपनी कक्षा की मॉनिटर होने के नाते, सभी बच्चों की अपेक्षा मेरी जिम्मेदारियाँ थोड़ी ज़्यादा ही थीं इस कारण स्कूल में पढ़ाई के साथ हल्की भागदौड़ भी लगी रहती थीं। स्कूल से आते ही बहुत अधिक थकान के कारण मुझको खाना खाने का भी होश न रहता। अपने मन में अपनी इन्हीं बुरी आदतों और स्कूल के होमवर्क के बारे में सोचती हुई मैं घर की ओर बढ़ ही रही थी कि अचानक मेरी नज़र उन मजदूरों पर पड़ी जो उस जलाती हुई धूप में पसीने से भीगे हुए भवन निर्माण का काम कर रहे थे।

Page No.
Date

मैं अपने कदम तेजी से बढ़ा रही थी क्योंकि मुझे अपने घर पहुँचने की बड़ी जल्दी थी। दोपहर के वक़्त की कड़कती धूप में मैं बुरी तरह भीगी हुई थी। और घर जाते ही बैग पटककर सोने की ताक में थी। इन्हीं आशाओं को मन में लिए मैं घर की ओर भागी जा रही थी। प्यास के कारण कंठ भी सूख रहा था.. कि अचानक राह में मैंने मजदूरों की एक टोली देखी जो भवन निर्माण का काम बड़े परिश्रमपूर्वक कर रहे थे। दो मिनट खड़े होकर मैंने उनके इतने मुश्किल काम को देखा और तब मुझे अहसास हुआ कि उनके काम के आगे तो मेरा काम कुछ भी नहीं था, सिर्फ एक होम-वर्क ही तो था!

धूप बहुत तेज थी इसलिए मुझे उनसे बात करने का मौका नहीं मिला पर घर आकर हमेशा की तरह इस बार मैं सोई नहीं क्योंकि मैंने उन मजदूरों से एक बहुत बड़ी सीख ले ली थी। उनका काम तो कड़कती धूप में ईंट पत्थरों को तोड़कर भवन बनाने का था और मेरा.., मेरा काम घर की छाँव तले होमवर्क पूरा करने का!! और फिर मेरा काम तो उनसे कितना आसान था। मैंने सारा होमवर्क पूरा किया और मैम से शाबाशी भी पाई।

कुछ दिनों बाद जब मैं रोज़ की तरह आई. टी का पीरियड लेने कम्प्यूटर लैब में गई तो मुझे मैम ने 'वोकेशन इन वोकेशन' प्रतियोगिता के बारे में बताया। जिसके अंतर्गत मैं उन मजदूरों से मिल सकती थी जिनसे मैंने बहुत बड़ी सीख ली थी। मैंने इस प्रति-योगिता में भाग लिया और मैं उन सभी मजदूरों से मिली। मैंने उनसे उनके कौशल के विषय में जाना जिसका प्रयोग वे ईंट से ईंट जोड़कर एक बड़ा भवन बनाने में करते हैं। उन्होंने बताया की उन्हें अपने मन में इतने बड़े कार्य को संपन्न करने के लिए एक दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है।

उन मजदूरों ने मुझे उनके बीच एकता के महत्व को समझाया। उनके कार्य में यदि उनका संतुलन बिगड़े तो उन्हें कितना नुकसान उठाना पड़ सकता है, इसका पता मुझको चला। मैंने उनसे उनके कार्य में बाधा उत्पन्न करने वाली समस्याओं के बारे में पूछा तो वे मुझे एक पुलिस अधीक्षक कहकर हँसने लगे। कहने लगे की मैं एक पुलिस की भाँति उनसे पूछताछ कर रही हूँ। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं भी आप सब की तरह ही एक मजदूर की बेटी हूँ।

उन्होंने बताया की कार्य के मध्य, वे अपने बच्चों को भरपूर समय नहीं दे पाते तो मैंने उन्हें विभिन्न क्रेच, जो बच्चों की देखभाल करते हैं, के बारे में बताया।

'वोकेशन इन वोकेशन' प्रतियोगिता की वजह से मैं उनसे बहुत कुछ सीख पाई।

कार्य करते वक़्त एकाग्रता, एकता व दृढ़ निश्चय ये तीनों ही कितने अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, इस बात का पाठ मुझे उन मजदूरों ने पढ़ाया; जिनको खुद रहने के लिए अपनी स्वयं की छत नसीब नहीं, परन्तु दूसरों के लिए महल खड़ा करने की हिम्मत रखते हैं।

अंत में अपने शब्दों को विराम देते हुए मैं 'वोकेशन इन वोकेशन' प्रतियोगिता को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनके कारण मैं इतने नए व सुनहरे अनुभव ग्रहण कर पाई।

साथ ही इस कहानी के माध्यम से मैं उन मजदूरों को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनके कारण मैं विभिन्न कौशल, जो भविष्य में मेरे प्रत्येक कार्य में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

धन्यवाद